ISSN 2454-3705

श्रुतसागर | શ્રુતસાગર
SHRUTSAGAR (MONTHLY)

January-2021, Volume : 07, Issue : 08, Annual Subscription Rs. 150/- Price Per copy Rs. 15/-

EDITOR : Hiren Kishorbhai Doshi

BOOK-POST / PRINTED MATTER

जसापुरतीर्थ (कच्छ) आदिनाथ जिनालय का मनोरम दृश्य

(विवरण - पृ. १० पर)

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

For Private and Personal Use Only

प्राचीन लेखन सामग्री सचित्र परिचय श्रेणी (चित्र - १)

हस्तप्रत युग में आधुनिक बॉलपेन, पेन्सिल अथवा अन्य मुद्रणसामग्री उपलब्ध नहीं थी, फिर भी उस समय की हाथ से लिखने की कला मुद्रण को भी फीका कर दें ऐसी थी। इसके लिए जिन साधनों का उपयोग किया जाता था, उन साधनों का क्रमशः परिचय देने का प्रयास किया जा रहा है। ये साधन सम्राट् सम्प्रति संग्रहालय, कोबा में सुरक्षित हैं। इस क्रम में सर्वप्रथम प्रस्तुत है कागज पर रेखाएँ खींचनेवाला साधन ओलिया।

हस्तप्रतों में बिल्कुल सीध में अक्षरों की लिखावट देखने से यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है कि उस समय ऐसी लिखावट कैसे सम्भव होती होगी? इस प्रश्न का उत्तर है 'ओलिया'। ओलिया को मारवाड़ी प्रतिलेखक "फांटियुं" के नाम से जानते हैं। यह शब्द संस्कृत-आलि, प्राकृत-ओली तथा गुजराती शब्द ओल पर से बना है। ओळी यानी पंक्ति, सीधी रेखा। ऐसी ओळी को कागज पर उभारने वाला साधन यानी 'ओळिया'।
यह ओलिया लकड़ी के तख्ते के ऊपर अथवा मजबूत गत्ते के ऊपर जिस आकार के अक्षर लिखने हों, उसके अनुसार समान दूरी पर छेद करके, उसमें मोम लगा हुआ मोटा डोरा लगाने से बनता है। डोरा लगाने के बाद वह इधर-उधर खिसके नहीं, इसलिए उसके ऊपर चावल, इमली के बीज के पतले रेशे अथवा रोगानमिश्रित रंग आदि लगाए जाते हैं।

अक्षरों के आकार के अनुसार एवं पंचपाठ, त्रिपाठ, टबार्थ आदि शैली में लिखने के लिए अलग अलग प्रकार से डोरे बाँधे जाते थे। इस ओळीया पर उसी माप के कागज रखकर उसके ऊपर हथेली के पंजे एवं अंगुठे से दबाया जाता था। इसकी वजह से गत्ते पर बँधे हुए डोरों की छाप कागज पर उभर आती थी। उसी के आधार पर एक समान बिल्कुल सीधी रेखा में अक्षरों को लिखा जा सकता था। कागज पर बनी हुई रेखाओं की छाप कुछ ही देर में समतल हो जाती थी जिससे देखने वाले को आश्चर्य होता था कि इतनी सीधी रेखा में समान कद के अक्षर भला कैसे लिखे जा सकते हैं !

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

RNI : GUJMUL/2014/66126 ISSN 2454-3705

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का मुखपत्र

श्रुतसागर श्रुतसागर

SHRUTSAGAR (Monthly)

वर्ष-७, अंक-८, कुल अंक-८०, जनवरी-२०२१

Year-7, Issue-8, Total Issue-80, January-2021

वार्षिक सदस्यता शुल्क - रु. १५०/- ❖ Yearly Subscription - Rs.150/-

अंक शुल्क - रु. १५/- ❖ Price per copy Rs. 15/-

आशीर्वाद

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संपादक ❖ हिरेन किशोरभाई दोशी

❖ सह संपादक ❖ रामप्रकाश झा

❖ संपादन निर्देशक ❖ गजेन्द्रभाई शाह

राहुल आर. त्रिवेदी

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ जनवरी, २०२१, वि. सं. २०७७, पौष शुक्ल द्वितीया

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

(जैन व प्राच्यविद्या शोध-संस्थान एवं ग्रन्थालय)

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर-३८२३२६

फोन नं. (079) 23276204, 205, 252 फैक्स : (079) 23276249, वॉट्स-एप 7575001081

Website : www.kobatirth.org **Email :** gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रम

१.	संपादकीय	रामप्रकाश झा	५
२.	श्रुतप्रेमी दाताओं की सूची	-	६
३.	गुरुवाणी	आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी	७
४.	Awakening	Acharya Padmasagarsuri	८
५.	२ अप्रगट प्रतिष्ठा स्तवनो	गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी	९
६.	व्यवहारचूलिका अंतर्गत षोडश-स्वप्नविचार	मुनि ध्यानसुन्दरविजय, गजेन्द्रभाई शाह	२०
७.	धर्मकथानुयोगनी महत्ता अने श्री देवभद्रसूरिकृत कथारत्नकोष	मुनिश्री पुण्यविजयजी	३०
८.	पुस्तक समीक्षा	डॉ. हेमन्त कुमार	३३

पंडित सरसी गोठडी, मुझ मन खरी सुहाय ।
आले जे बोलावतां, माणीक आपि जाय ॥

प्रत क्र. १२६५८२

भावार्थ- पंडित के साथ मित्रता मेरे मन को अच्छी लगती है, क्योंकि वे सहज बुलाने पर भी हितशिक्षारुपी माणिक्य दे जाते हैं।

❖ प्राप्तिस्थान ❖

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
तीन बंगला, टोलकनगर, होटल हेरीटेज़ की गली में
डॉ. प्रणव नाणावटी क्लीनिक के पास, पालडी
अहमदाबाद - ३८०००७, फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संपादकीय

रामप्रकाश झा

श्रुतसागर का प्रस्तुत अंक आपके करकमलों में समर्पित करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इस अंक में योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरजी की अमृतमयी वाणी व स्थायी स्तम्भों के अतिरिक्त तीन अप्रकाशित कृतियों का प्रकाशन किया जा रहा है।

सर्वप्रथम **"गुरुवाणी"** में जैनदर्शन की विशालता को दर्शाने वाली लेखशृंखला "जैन दृष्टिए आत्मानुं अनन्त वर्तुल" को प्रकाशित किया गया है। द्वितीय लेख राष्ट्रसंत आचार्य श्रीपद्मसागरसूरीश्वरजी के प्रवचनों की पुस्तक 'Awakening' से क्रमशः संकलित किया गया है, जिसमें मोक्ष के स्वरूप और उसकी पात्रता के ऊपर प्रकाश डाला गया है।

अप्रकाशित कृति प्रकाशन के क्रम में सर्वप्रथम पूज्य गणिवर्य श्रीसुयशचन्द्र-सुजशचन्द्रविजयजी म. सा. के द्वारा सम्पादित दो जिनबिम्बप्रतिष्ठा स्तवन प्रकाशित किए जा रहे हैं - **"नवसारी पार्श्वनाथ स्तवन"** तथा **"जसापुरनी प्रतिष्ठानो चौढालियो"**। इन प्रतिष्ठा स्तवनों में जिनबिम्ब की प्रतिष्ठा समारोह का ऐतिहासिक वर्णन किया गया है। तृतीय कृति के रूप में पूज्य मुनि श्री ध्यानसुन्दरविजयजी तथा संस्था के पंडितवर्यश्री गजेन्द्रभाई शाह द्वारा सम्पादित प्रायः व्यवहार छेद सूत्र के ऊपर व्यवहारचूलिका नामक विभाग का अंश **"व्यवहारचूलिका अन्तर्गत षोडशस्वप्न विचार"** प्रकाशित किया गया है। इस कृति में चंद्रगुप्त राजा को आए १६ स्वप्न और भद्रबाहुस्वामी द्वारा पंचमकाल के संदर्भ में किए गए फलादेश की बात है।

पुनःप्रकाशन श्रेणी के रूप में इस अंक में पुण्यविजयजी लिखित लेख **"कथारत्नकोश अने तेना कर्त्ता श्री देवभद्रसूरि"** के आगे का अंश प्रकाशित किया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत जनसामान्य हेतु जैन कथा साहित्य की उपयोगिता तथा उसकी महत्ता के ऊपर प्रकाश डाला गया है।

पुस्तक समीक्षा के अन्तर्गत श्री यशोदेवसूरिजी कृत **"पाक्षिकसूत्र"** टीका की समीक्षा प्रस्तुत की गई है, जिसका अनुवाद मुनि श्री हृदयसुन्दरविजयजी ने किया है तथा मुनि श्री न्यायरत्नविजयजी ने उसे संशोधित किया है। जिसके कारण इस पुस्तक का महत्त्व बढ़ गया है।

हम आशा करते हैं कि इस अंक में संकलित सामग्रियों के द्वारा हमारे वाचक अवश्य लाभान्वित होंगे व अपने महत्त्वपूर्ण सुझावों से हमें अवगत कराने की कृपा करेंगे। जिससे आगामी अंकों को और भी परिष्कृत किया जा सके।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रुतप्रेमी दाताओं की अनुमोदना

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

सकल जैनसंघ का गौरवस्थान

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

सदुपदेशक : प्राचीन श्रुत-तीर्थोद्धारक, राष्ट्रसंत

पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा

श्रुतप्रेमी दाताओं की नामावली

- श्री महावीर श्वेताम्बर मू. पू. जैन संघ, अहमदाबाद
- श्री महावीरनगर जैन दहेरासर ट्रस्ट, नवसारी
- श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर टेम्पल, चेन्नई
- श्री नवकार अडसठ अक्षर तीर्थधाम ट्रस्ट, जालोर
- श्री शांति वल्लभ टीवीएम लुम्बीनी जैन संघ, चेन्नई
- श्री मणिनगर जैन श्वेताम्बर मू. पू. संघ, मणिनगर
- श्री खींमत श्वेताम्बर मू. पू. जैन संघ, खींमत
- श्री जैन श्वेताम्बर मू. पू. श्री संघ, चेन्नई
- Jain Society of Greater Cleveland, USA

धन्यवाद... अनुमोदना... अभिनंदन...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवाणी

जैनदृष्टिए आत्मानुं अनन्त वर्तुळ

योगनिष्ठ आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरि म.सा.

आचारोमां अने विचारोमां जैनधर्म उदार छे अने ते जगतने दिव्य बनाववाना उपायोने दर्शावी शके छे। माटे जैनधर्मने पूर्वनी पेठे राजकीय धर्मनुं रूप आपवुं जोइए। सर्वदेशमां व्यापकधर्म थवाने अने सर्वदेशमां सर्वजननी व्यावहारिक तथा आत्मिकोन्नति करवाने जैनधर्म योग्यता धरावे छे, तेथी जैनधर्मनो सर्वदेशमां सर्वलोकोमां सर्वभाषाओ द्वारा फेलावो करवानी अत्यंत आवश्यकता छे।

आर्यावर्त्तमां पूर्वे अनेक जैनराजाओ थइ गया छे, अने तेओए जैनधर्मनो फेलावो कर्यो छे। विशालदृष्टिथी अने उदारभावथी पूर्वनी पेठे, जैनो जो लोकोने जैन बनाववा प्रयत्न करे तो तेओ संप अने कार्य करवानी योजनापद्धतिना नियमो प्रमाणे प्रवर्त्तनथी जगतमां फावी शके अने एकवार पुनः अनन्त ज्ञानवर्तुलवाळा जैनधर्मनो उद्धार करवा समर्थ थइ शके। सार्वजनिक, सर्वदेशीय, सर्वजन माननीय, सर्वत्र व्यापक, धर्माचार सामान्य नियमोने सर्वत्र फेलाववा जोइए।

आत्मज्ञाननी सीमा अपरिमित छे। सम्यग् आत्मानुं अवबोधवुं अने आत्माना गुणो प्रकट करवा ए जैनधर्मनो सार छे। आत्मानी साथे लागेला कर्मनो नाश करीने आत्मानी शुद्धता प्राप्त करवी ए जैनधर्म समयसारने निश्चयतः अवबोधवो।

आपणे जेम जेम अनुभवमां आगळ वधीए छीए तेम तेम संकुचितवृत्तिनो नाश थाय छे अने पूर्वकाळमां जे जे मान्यताओ स्वीकारी होय छे तेमां सुधारो करवानी आवश्यकता अवबोधाय छे। पूर्वपूर्वनुं ज्ञान खरेखर उत्तरोत्तर कालना ज्ञाननी अपेक्षाए लघुवर्तुलवाळुं होय छे।

जेम जेम ज्ञाननी वृद्धि थाय छे, तेम तेम ज्ञान स्वरूपात्मानुं वर्तुळ वधतुं जाय छे। मतिज्ञानरूप आत्मा करतां श्रुतज्ञानरूप आत्मानुं वर्तुल वधतां वधतां अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञानरूप वर्तुळथी आगळ वधीने अनन्त केवलज्ञानात्मारूप अनन्तवर्तुळ थाय छे।

धार्मिक गद्य संग्रह भाग – १, पृष्ठ – ६९३-६९४

क्रमशः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Awakening

Acharya Padmasagarsuri

(from past issue...)

On account of this kind of sinful thinking it allows its soul to be caught in the fetters of karma and seeks enjoyment with the result that it suffers the torments of the seventh hell. The happiness that salvation gives us is sublime and permanent. Creatures can attain salvation only when they are in the phase of human life. That is why even gods who live in heaven desire to be born as men. The happiness of gods in heaven is transitory because when their merit declines, they have to be born as men in this world.

"क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति ।।"

Ksheene punye martyalokam vishanti ॥

When their merit dwindles they enter this world as men.

Puniya Shravak could have easily attained the felicity of heavenly life but he desired permanent happiness. Hence, he surrendered himself at the feet of the Lord.

लभेद् यदयुतं धनं तद्धनं धनं यद्यपि
लभेत् नियुतं धनं निधनमेव तज्जायते ।
तथा धनपराधकं तदपि भावहीनात्मकम्
यदक्षरपदद्वयान्तरगतं धनं तद्धनम् ।।

Labhet yadyutam dhanam taddhanam dhanam yadyapi
Labhet niyutam dhanam nidhanameva tajjayate ।
Tatha dhanaparardhakam tadapi bhaavaheenaatmakam
Yadaksharapadadvayaantaragatam dhanam taddhanam ॥

(Continue...)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२ अप्रगट प्रतिष्ठा स्तवनो

गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी

स्तवनोनी एक विशेषता जेम तेनी प्रभुगुणस्तवनामां रहेली होय छे तेम ज तेनी अन्य विशेषता तेना रागोमां, शब्दोमां, प्रासोमां के पदार्थवर्णनमां पण होय छे। आ वखते अमे वाचकोने माटे तेमांथी पदार्थ वर्णनाने समजावती २ ऐतिहासिक रचनाओ प्रगट करी छे। आ बन्ने कृतिओ प्रतिष्ठाना वर्णन संबंधि होई दस्तावेजी तो छे ज, साथे साथे कृतिमां उल्लेखित प्रतिष्ठा विधिना तथा आत्मनिवेदनना वर्णनने कारणे विशेष ध्यानार्ह छे।

प्रतिष्ठाविधि स्तवनो- कृतिनाम प्रमाणे आवी कृतिओ मुख्यत्वे प्रतिष्ठा संबंधि माहितीनी वर्णना करवा माटे ज रचाती होय छे। तेमां प्रतिष्ठा क्यारे थई?, कोणे करी?, कया आचार्यभगवंतादिकनी निश्रामां थई?, ते प्रसंगे केवो महोत्सव करायो? तेनो विगते चितार आलेखाय छे। जो के बीजी रीते विचारीए तो आ रचनाओ संस्कृत चैत्यप्रशस्तिनी जेवी ज गुर्जरभाषानी रचना छे।

आपणे त्यां जोवा मळता आवा अन्य प्रतिष्ठास्तवनोमां वासुपूज्य जिनालय (सुरत)नुं प्रतिष्ठाविधि स्तवन, हठीसिंघजीना जिनालयनी अंजनप्रतिष्ठाना ढाळीया, संभवनाथ जिनालयनुं स्तवन विगेरे स्तवनो आवा ज वर्णनात्मक स्तवनो छे।

कृति परिचय

नवसारी[पार्श्वनाथचैत्ये?] जिनबिंबप्रतिष्ठाविधि उत्सववर्णन स्तवन- प्रस्तुत कृति अंचलगच्छीय आचार्य उदयसागरसूरिजीना शिष्य मुनि करूणासागरजीनी रचना छे। कृतिकारे काव्यांतमां नोंध्या मुजब तेमणे प्रस्तुत प्रतिष्ठा विधान शास्त्रानुसारे थयुं छे ते दर्शाववा माटे पू. भद्रबाहुस्वामीजी कृत प्रतिष्ठाकल्पने सामे राखीने तदनुसार ज प्रस्तुत कृतिनी रचना करी छे। कृति मध्यमकदनी, ५ ढाळमां विभक्त रचना छे।

कृतिनी प्रथम ढाळमां प्रभुना गुणवैभवनी स्तवना कर्या बाद कविए त्यारपछीनी ढाळमां ते प्रतिष्ठा अवसरे जिनालयमां प्रतिष्ठित थयेला जिनबिंबोनी तथा तेना प्रतिष्ठापकोनी संक्षेपमां नोंध रजू करी छे।

खास आ नोंधमां शाह कचरा वडे तथा विमल मंत्रीना वंशज शाह जीवणदास वडे निर्माण करायेल धातुना तथा पाषाणना जिनबिंबोनी, तेमां'य प्रतिमाप्रकार रूपे आलेखायेल समेतशिखरजीना प्रतिकरूप वीसवटो, अतीत-अनागत चोवीसीना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिकरूप २ चोवीसवटा, विहरमान जिननो वीसवटो तथा ऋषभादि ४ शाश्वत जिनना (चौमुख?)बिंब विगेरेनी नोंध उल्लेखनीय छे।

त्यारपछी स्तवननी त्रीजी ढाळथी कविए प्रतिष्ठाविधान क्रमनी गुंथणी करी छे जेमां कविए प्रथम दिवसे वेदिका बांधवा माटेनी भूमिशुद्धिथी मांडी मंडपारोपण तथा जलयात्रा विधान कर्यानी, बीजे दिवसे नंदावर्तना पाटलानी स्थापना कर्यानी, त्रीजे दिवसे सिद्धचक्र तथा वीसस्थानकना अने नवग्रह तथा दस दिक्पालना पाटलानुं पूजन तथा स्थापन कर्यानी, चोथे दिवसे प्रभुनुं च्यवन कल्याणक उजवता तेमां अंते करावाता चौद स्वप्न दर्शननुं विधान कर्यानी, प्रभुना जन्मकल्याणक अने पांचमे दिवसे प्रभुनो जन्म महोत्सव, ५६ दिक्कुमरीनुं सूतिकर्म तथा अढार स्नात्र(अभिषेक) विधि कर्यानी तथा छट्ठे दिवसे प्रभुना पाणिग्रहण उत्सव पछी तेमना राज्य महोत्सव, वर्षीदान तथा दीक्षा कल्याणकनुं विधान कर्यानी नोंध क्रमबद्ध आलेखी छे।

प्रतिष्ठा महोत्सवना सातमा दिवसनुं विधान कृतिनी चोथी ढाळमां छे। केवलज्ञान कल्याणकना आ विधानमां कविए जिनबिंबोनी अंजनशलाकाने अवसरे विधान माटे तैयार कराएल अधिवासनने शेनाथी मंतरवामां आव्युं?, ते बिंबो पर वासक्षेप तथा अक्षरन्यास कई रीते करायो?, इंद्र-इंद्राणीनुं स्थापन कर्या बाद क्यारे अंजनशलाका कराई?, केवलज्ञान उत्पन्न थता प्रभुने समवसरणमां स्थापी कई-कई भावना भवाई?, तथा दिक्पालोने कई रीते प्रसन्न कराया विगेरे विगतो अहीं अनुक्रमे रजू करी त्यारपछीनी काव्यनी पांचमी ढाळना शरूआतना पद्योमां प्रभुजीना निर्वाण कल्याणकनी वर्णना आलेखी छे।

विशेषमां अहीं प्रभुजीने अंत समये वर्तता ध्याननुं तथा शैलेशीकरणनुं स्वरूप मुनिश्रीना कर्मग्रन्थादि विषयोना अभ्यासनो परिचय करावे छे।

आ ज ढाळना शेष पद्योमां प्रभुना गुणवैभवनुं स्मरण करता कविए सं. १८०१ वैशाख सुद ५ ना प्रतिष्ठा थयानी ऐतिहासिक नोंध अहीं रजू करी ते अवसरे पधारेला संघोना नामनी, श्रावकोवडे करायेला स्वामिवात्सल्यादिक सत्कृत्योनी, आ स्तवनना गानथी मळता लाभोनी तथा पोतानी गुरुपरंपरानी आलेखना करी ढाळनी पूर्णाहूति करी छे। छेल्ले कळशमां फरी कविए कृतिरचनानो मूळ स्रोत तथा स्वनामोल्लेख करी कृतिनुं समापन कर्युं छे।

कृतिकार परिचय

काव्यमां नोंध्या मुजब कवि करूणासागर अंचलगच्छना उदयसागरसूरिजीना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिष्य छे। तेमनां विशे अन्य कोइ माहिती तो मळती नथी परंतु लेखन प्रशस्तिमां कर्ताए जाते नोंध्युं छे तेम तेमणे सुरत बंदरमां प्रस्तुत प्रतनुं आलेखन कर्युं छे माटे कदाच सुरतना ज भंडारमांथी तेमनी अन्य कृति के कोइ सामग्री मले तो कवि माटे कशु विशेष जाणी शकाय। आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबामां कर्तानी एक कृति अजितजिन स्तवन प्राप्त थाय छे। जो के आमां गच्छनो उल्लेख नथी। आ ज भंडारमां करूणासागरना शिष्य मुनि तत्त्वसागरजीना स्व हस्ते वि.सं. १८३७मां चिरंजीवी भोजराजना अध्ययनार्थे देवसी प्रतिक्रमणनी एक प्रत लखायेली मले छे।

जसापुर प्रतिष्ठानो चोढालीयो- आ कृति शेठ केशवजी नायके कच्छना-जसापुरमां करावेल चैत्यनी प्रतिष्ठानुं वर्णन करती कृति छे। काव्यमां मंगलाचरण करीने कविए कच्छना–जसापुरमां आदिनाथ प्रभुना चैत्यनी प्रतिष्ठा वि.सं.१९३२ ना महा सुद पांचमना रोज थयानी ऐतिहासिक नोंध करी काव्यनी प्रथम ढाळनी शरूआत करी छे। अहीं ढाळना प्रथम पद्यमां कविए उपरना माळे चौमुख अजितजिननी स्थापना थयानी दस्तावेजी नोंध आलेखी त्यारपछीना शेष पद्योमां तथा ते पछीनी ढाळोमां प्रभु पासे भवनाटकनुं, प्रभुना गुणवैभवनुं, प्रेमलक्षणाभक्तिनुं, स्वदोषना स्वीकारनुं तथा हृदयमां उद्भवेली प्रार्थनानुं चित्रण विगते करी दर्शाव्युं छे। खास अहीं ओछा पण सुंदर शब्दोमां करायेलां ढाळना वर्णनमां तथा तेनी देशीओनी पसंदगीमां कविनी विद्वत्ता देखाय आवे छे।

कृतिकार परिचय

कृतिकारे अहीं दरेक ढाळना अंते पोतानुं नाम कस्तूर होवानुं जणाव्युं छे। पण तेओ कया गच्छना छे के कोनी परंपरानी तेनी अहीं कशी नोंध आलेखी नथी। जो के प्रतिष्ठा करावनार गृहस्थ शेठ केशवजी नायक अंचलगच्छनी परंपराना श्रावक होइ प्रस्तुत जिनालय तेमणे पोतानी परंपराना गुरु भगवंत पासे ज कराव्युं होय तेवुं बने। अने ते उपरथी ते चैत्यनी स्तवना पण तेमनी ज परंपराना कविवडे कराइ होय तेवी शक्यता पण वधु गणाय। जो आपणी अटकळ साची होय तो प्रस्तुत कृतिकार अंचलगच्छना कवि होय पण शके, परंतु ते अंगेनो निर्णय कोई प्रमाण मळे तो ज थाय।

प्रान्ते- आम बन्ने कृतिओ एक रीते जोवा जइए तो अंचलगच्छनी परंपरानी कृतिओ गणाय। खास तो आवी ऐतिहासिक कृतिओ उपलब्ध कराववा बदल परम पूज्य श्रीमोहनलालजी महाराज जैन ज्ञानभंडार(सुरत)ना तथा श्रीचंद्रसागरसूरि जैन ज्ञानभंडार(उज्जैन)ना व्यवस्थापकश्रीओनो खूब खूब आभार।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करुणासागर मुनि कृत

नवसारी पार्श्वनाथ स्तवन

॥ॐ॥ ॐ नमः॥ मेंदीनी देशी ॥

श्री**नवसारी पासजी** रे, अदभुत महिमा जास, जिनसुं रंग लागो।
हांजी रंग लागो चितचोल[१], प्रभुसुं रंग लागो (आंकणी)
समकितदायक सर्वनें रे, पूरें सहूनी आस, जिनसुं... ॥१॥

केवल[ज्ञानदिवा]करू रे, भासित-लोकालोक, जिनसुं...।
केवलदर्शन-आगरू[२] रे, सेवे सुरनर थोक[३], जिनसुं... ॥२॥

अकल अरूपि(पी) साहिबो रे, अनंतचतुष्टयधार, जिनसु...।
अव्याबाध-अलंकरू रे, अविनासी अविकार, जिनसुं... ॥३॥

त्रिभुवनतिलक समो बन्यो रे, तीरथ एह उदार, जिनसुं...।
देश विदेशथकी जिहां रे, आवें संघ अपार, जिनसुं... ॥४॥

रंगमंडप रलीयामणो रे, अति उंचो प्रासाद, जिनसुं...।
दंड-कलश धज लहलहें[४] रे, लेतां गगनसुं वाद, जिनसुं... ॥५॥

॥ धणरा ढोला-ए देशी ॥

सुविहित गुरु उपदेशथी रे, श्रावक सहू उच्छाहि[५], जिनवर पूजो।
पूजो पूजो रे भविकजन पूजो, पूजें शिवसुख थाय, जिनवर पूजो (आंकणी)
बिंब प्रतिष्ठा कराववा रे, हरखे **कचरा साह**, जिनवर पूजो ॥१॥

बिंब भरावें नव-नवां रे, अतिसुंदर आकार, जिनवर...।
केइ उपलना[६] धातुना रे, चोवीसवटा[७] श्रीकार[८], जिनवर... ॥२॥

समेतशिखरगिरि ऊपरे रे, सीधा[९] श्रीजिन वीस, जिनवर...।
वीसवटो[१०] ते जी(जि)नतणो रे, भराव्यो सुजगीस, जिनवर... ॥३॥

अतीत अनागत प्रभू(भु)तणा रे, चोवीसवटा दोई सार, जिनवर...।
रीरीमय[११] ते भरावीया रे, अवर बीं(बिं)ब अपार, जिनवर... ॥४॥

विमल मंत्रीना वंसमां रे, **जीवनदास** वखांण, जिनवर...।
तेणें बिंब भरावीयां रे, भाव घणो मन आंण, जिनवर... ॥५॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विहरमान जिनजीतणो रे, वीसवटो श्रीकार, जिनवर... ।
आदीसर प्रभू(भु) जाणीइं रे, शाश्वत जिन वली च्यार, जिनवर... ॥६॥

॥ ढाल-३ ॥ चंद्रप्रभुनी चाकरी रे-ए देशी ॥

प्रथम अट्ठाही महोच्छवें रे साहिबा, कीधी भूमी पवित्र जिणेसर सेवीइं रे ।
वेदिका बांधी हरखसुं रे साहिबा, मंडप कीध विचित्र जिणेसर सेवीइं ॥१॥

चैतर वदि तेरस दिनें रे साहिबा, लेई सवि वाजित्र[१२] जिणेसर... ।
अष्टोत्तर शत कूपना[१३] रे साहिबा, लीधां जल सुपवित्र जिणेसर... ॥२॥

गंगाजल वली आंणीयां रे साहिबा, कंचनकुंभ भराय जिणेसर... ।
नंदावर्तनी थापना रे साहिबा, बीजें दिन शुभ थाय जिणेसर... ॥३॥

त्रीजें दिन सिद्धचक्रना रे साहिबा, वीस थानकना सार जिणेसर... ।
नव ग्रह दस दिगपालना रे साहिबा, थाप्या पट श्रीकार जिणेसर... ॥४॥

चवन कल्याणक मोहच्छवे रे साहिबा, चोथे दिन ते थाय जिणेसर... ।
चौद सुपननी वर्णना रे साहिबा, देखें प्रभू(भु)नी माय जिणेसर... ॥५॥

जन्म महोच्छवनिं दिनें रे साहिबा, कीजें स्नात्र अढार जिणेसर... ।
छपन दिसाकुमरी[१४] मली रे साहिबा, पंचम दिन ए सार जिणेसर... ॥६॥

पाणिग्रहणतणो कर्यो रे साहिबा, वरघोडा मंडाण[१५] जिणेसर... ।
चोरी बांधी चोंपसुं[१६] रे साहीबा, बेसार्या जिनभांण जिणेसर... ॥७॥

च्यारें मंगल वरतीया रे साहिबा, वरत्यो जय-जयकार जिणेसर... ।
राज्य महोच्छव तिणि दिनें रे साहिबा, वरसीदान विचार जिणेसर... ॥८॥

अति आडंबरथी[१७] तदा रे साहिबा, दीक्षा लें भगवान जिणेसर... ।
छट्ठा दिननी ए क्रिया रे साहिबा, कीधी सास्त्र-प्रमाण जिणेसर... ॥९॥

॥ ढाल-४ ॥ माहरी सही रे समाणी-ए देशी ॥

सातमा दिननी करणी सुणजो, ज्ञान कल्याणक केरी रे,
माहरो प्रभुजी सोभागी ।
प्रभुजी सोभागी नें हुं थयो रागी, पुन्यदसा मोहिं जागी रे,
माहरो प्रभुजी सोभागी ॥ (ए आंकणी)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अधिवाचन शुचिमंत्रे मंत्री, कीधी भक्ति भलेरी रे, माहरो... ॥१॥
वास ठव्यो तव बिंबनें अंगें, गणधरमंत्रे[१८] मंत्री रे, माहरो...।
अक्षर बिंबनें अंगे लखीया, ह्रींकारादिक यंत्री रे, माहरो... ॥२॥
कल्पित इंद्र इंद्राणी मिलीनें, प्रभू(भु)जीना गुण गावें रे, माहरो... ।
शुभ लग्नें शुभ मुहूरत वेला, अंजनशिलाका थावें रे, माहरो... ॥३॥
केवलज्ञाननी ज्योति प्रगटी, लोकालोक-प्रकाशी रे, माहरो...।
चौसठ इंद्र सुरासुर सेवें, आतमतत्त्व-विलासी रे, माहरो... ॥४॥
समवसरणमां प्रभू(भु)जी थापी, भवियण भावना भावें रे, माहरो... ।
थापना कीधी गणधर केरी, त्रिपदी प्रभू(भु)जी बतावें रे, माहरो... ॥५॥
उत्पाद[१९] व्यय[२०] ध्रौव्य[२१] सुणीनें, विरचें द्वादस अंग रे, माहरो...।
चउविह संघने ए उपगारी, शासन जास अभंग रे, माहरो.. ॥६॥
चउ दिसें तिणि बल उछाली[२२], प्रसन(न्न) कर्या दिगपाल रे, माहरो...।
इत्यादिक बहू कीरिया कीधी, सातमें दिन सुविशाल रे, माहरो... ॥७॥

॥ ढाल-५ ॥ राग-धन्यासी ॥

हवें सुणज्यो भवि अष्टम दिननी, करणी शिवसुखदाई रे।
मोक्ष कल्याणक केरो महोच्छव, कीजें प्रभुगुण गाई रे।
नमो रे नमो श्रीपास जिणेसर, **नवसारी**मंडाण रे।
सकल तीरथमां सार ए तीरथ, नमतां कोडि कल्याण रे ॥१॥ नमो...(आंकणी)
शुक्लध्याननो बीजो पाईओ[२३], सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती रे।
ध्यातां बादर योगनें रूंधे, प्रभू(भु)जी सवि कर्म घाती रे ॥२॥ नमो...
चौदमुं गुणठाणुं प्रभू(भु) फरसी[२४], जोग[२५] समस्त निवारी रे।
शैलेशी[२६] करी संवरी[२७] हूई, प्रभू(भु) परण्या शिवनारी रे ॥३॥ नमो...
जन्म जरा मरणादिक विरहित [२८], प्रभू(भु) हूआ अविनासी रे।
सादि-अनंत[२९] भांगे थिति[३०] जेहनी, चिदानंद-विलासी रे ॥४॥ नमो...
ध्येयसरूपी ध्याताजननें, आतमसत्ता प्रगटी रे।
अकल अरूपी आत्मस्वरूपी, भवसंतति[३१] सवि विघटी[३२] रे ॥६(५)॥ नमो...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इत्यादिक प्रभु भावना भावी, वासक्षेप करीजें रे।
त्राण[३३] सरण प्रभू(भु) तुं जगजननें, इम कही गुण गाईजें रे ॥७(६)॥ नमो...

संवत अढार इकडोत्तरा**(१८०१)** वरषें, मास वैशाख वखाण रे।
शुक्ल पक्ष पंचमी तिथि रूडी, वार बृहस्पति जाण रे ॥८(७)॥ नमो...

बिंब प्रतिष्ठा इणि दिन कीधी, आणी मन आणंद रे।
ओच्छव महोच्छव अति घणा हूआ, हरख्या भवियणवृंद रे ॥९(८)॥ नमो...

सूरत दमणतणा संघ आव्या, **घणदीवी**ना संघ रे।
राजनगर खंभात प्रमुखना, श्रावक पण बहु रंग रे ॥१०(९)॥ नमो..

साहमीवच्छल संघ जिमाड्या, धनना लाहा[३४] लीध रे।
जाचकजन संतोष्या सघला, अतिघणा दान ज दीध रे ॥११(१०)॥ नमो...

एह तवन[३५] जे भणस्यैं गणस्यैं, तस घरि मंगलमाल रे।
ध्यान शुद्धे समकितगुण निरमल, अनुक्रमें मोक्ष रसाल रे ॥१२(११)॥ नमो..

श्री**अंचलगच्छे** दिन दिन दीपें, **श्रीउदयसागरसूरी(रि)**राय रे।
तास सीस इम **करूणासागर**, प्रभुजीना गुण गाय रे ॥१३(१२)॥ नमो...

कलश- श्रीपास जिनवर संघ सुखकर तेहनी सानिध करी,
शुभ रीतिसुं ए थई प्रतिष्ठा शास्त्र आगम अनुसरी।
श्री**भद्रबाहु**कृत **प्रतिष्ठाकल्प**नें अनुमान ए,
श्रीसूरि विद्यागुरु-प्रसादे कहे **करूणा** ज्ञान ए ॥१॥

॥ इति श्रीनवसारीमध्ये कृतश्रीजिनबिंबप्रतिष्ठा तदुत्सवस्य स्तवनं समाप्तम्

॥ लिखितं मु. **करूणासागरगणिना** *॥श्रीः॥* **राजनगरीय** *श्राविका* **बचीबाई** *तथा* **मांणिकबाई** *पठनार्थम् ॥ श्रीसूरतिबन्दिरे ॥छ॥*

कवि कस्तूर रचित

जसापुरनी प्रती(ति)ष्ठानो चोढालीयो

दूहा- **आदि** ति(ती)र्थंकर प्रणमीए, **मरुदेवा**नो नंद।
तेहतणा सुपसायथी, कहुं प्रतिष्ठा संबंध ॥१॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेठ **केसवजी नायकें**, --(**कच्छ**?) **जसापुर** गांम।
तीहां प्रसाद करावीओ, कीधो उत्तम धांम[३६] ॥२॥

संवत एगुणी(ण) बत्रि(त्री)सना**(१९३२),** माहा सुद सुक्ल पक्ष।
वस्त(संत) पांचम रलीआमणी, वावरे[३७] लक्ष्मी लक्ष ॥३॥

मु(मू)लनायक जिन थापीआ, आदि(दी)श्वर सुखकार।
उपर चउमुख सोभता, मोहें बहु नर नार ॥४॥

[ढाल-१] ॥ सांभल रे तु सजनी मोरी, रजनी कीहां रमी आव्याजी-ए देशी॥

माहा सुद पांचमे सोमवारे, प्रभुजी तखते[३८] बेठाजी।
चउमुख जिनपति **अजित** जिणेसर, उपर सहुए दीठा सजनी सुणीएजी {रे } ॥१॥

मु(मू)लनायक प्रभु **ऋषभजी** थाप्या, मरुदेवानो नंद{न}जी।
नाभी(भि)राजाने कुले उपना, जांणि(णे) ते पु(पू)नमचंद सजनी... ॥२॥

रांणी **सुमंगला** तेहनो स्वांमि, **[सु]नंदा**ना हईडानो हारजी।
त्रिण लोकना राजा कहेवाय, जीवनप्र(प्रा)णाधार सजनी... ॥३॥

मु(मू)रति तारि(री) सहुने वालि(ली), जांणि ते मोहनवेलजि(जी)।
कल्पतरूनि(नी) परे वंछित पूरे, समकितने रंगरेल{जी} सजनी... ॥४॥

समकितधारी भाव धरीनें, पु(पू)जा करे नर नारीजी।
अपछरा उभी हाथ जोडीनें, होजो वंदना हमारी सजनी... ॥५॥

सुंदर ढाल में प्रेथे(प्रथ)म कीधी, चाखवा समकित मेवाजि(जी)।
प्रभुजी **कस्तूर** एटलो मागे, सी(शि)वसुंदरीने वरेवा{जी} सजनी... ॥६॥

॥ ढाल-२(बी)जी ॥ क्युं जाणु क्युं बनी आवसे-ए देसी ॥

नाटिक रचना ते आदरुं, लेवा शिववधु-दांन हो जिणंद।
सुमती(ति)सुंदरी नाचती, राग करे सु(श्रु)तज्ञांन हो जिणंद ॥१॥ नाटिक.(आंकणी)
सोल ठसी[३९] सिणगार छे, पंचरंग बन्यो ते वेस हो जिणंद।
साहेब सनमुख उभती, नाटिक तीहां करेस हो जी(जि)णंद ॥२॥ नाटिक..
समकित-रंगनी चुनडी, कमखो[४०] व्रत पचखांण हो जिणंद।
अनुभववेण[४१] समारती, देखो चतुर सुजांण हो जिणंद ॥३॥ नाटिक...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चंद्रमुखी मृगलोचनी, चाले ठम ठम चाल हो जिणंद।
भवनाटिकने टालवा, जिन आगल करे ख्याल[४२] हो जिणंद ॥४॥ नाटिक...

सुमता(ति)नाटकणी वीनवे, सांभल नाभिके कुमार हो जिणंद।
मारुदेवानो तु लाडडो, नाटिक दिलमांहि धार हो जिणंद ॥५॥ नाटिक...

मधुर स्वरे करी गावती, रीझवे दि(दी)नदयाल हो जिणंद।
मनमोहन अविकारथी, नाटिक देखे रसाल हो जिणंद ॥६॥ नाटिक...

सीताने रांम ते वल्लभो, **गोपी**ने कृष्ण पीआर[४३] हो जिणंद।
भ्रमर मने जिम केतकी, **राजुल नेम** विचार हो जिणंद ॥७॥ नाटिक...

ढाल बीजी पूरण करी, चढते शुभ परिणांम हो जिणंद।
कस्तूर एणी परे वीनवे, माहरे तुझसु कांम हो जिणंद ॥८॥ नाटिक...

॥ ढाल-त्रीजी ॥ देसी केरबानी छे ॥

॥ अलबेले सांई क्युं रे लगाओ अती(ति) बेरीआ-ए देसी ॥

मानव भव लही, धर्म कीयो नही, पड्यो नारि-रस ध्यांनमें,
निरंजन सांई अरज सुणो रे बंदीवानकी।
सुमता(ति)कु छोड दियें, कुमता(ति)कु पास लिए, न गमे वांणी तुझ ग्यांनकी।
निरंजन सांई अरज सुणो रे बंदीवानकी। ॥१॥

मोहके पास[४४] पडे, उहां बीमार जडे[४५],
तो[४६] बीन छंड्यो मोह ध्यांनकी, निरंजन...।
जि(जी)वकी हिंसा करी, मृषामें मन धरी,
चोरी करी और प्रीयांनकी, निरंजन... ॥२॥

पर-नारी संग कीये, भोग संभोग लीये,
जोयो विषयद्रष्टि तांनकी, निरंजन...।
अपनीकुं छोर दियें, औरकु वालि किये,
बांधी गती(ति) नरकांनकी[४७], निरंजन... ॥३॥

लोभसे नेह धरी, परि(रि)ग्रह भेलो करी,
रांणी वरी मोहराजानकी, निरंजन...।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एसे में नाच नचें, चउदे राजलोक विचें[४८],
भु(भू)ल्यो त्रीया-कूच[४९] पहाडांनकी, निरंजन... ॥४॥

बहोत में दुख पायो, तुम सनमुख आई भयो,
सेवक [हे?] हयेरांनकी[५०], निरंजन...।
तेरो में मुख दीठो, ध्यांनमे लागो मि(मी)ठो,
सेवक आयो चरणांनकी, निरंजन... ॥५॥

दासके काज सारो, जनम ने जरा टारो[५१],
करते अरज छोडि मांनकी, निरंजन...।
तेरो मे दास जाणी, मेरेपे दया आंणी,
परणादे[५२] शिव-पटरांनकी[५३], निरंजन... ॥६॥

मोह रांणीकु छोडि, संजम नारी जोडि,
वल(ल्ल)भ थई मुझ प्रांणकी, निरंजन...।
मिथ्यात्व डार दिये, चरणकी जोरु किये,
खेलेंगि[५४] चोपड[५५] श्रुतग्यानकी, निरंजन... ॥७॥

खेलत नर नारी, बहोत में लगी प्यारी,
प्रिये बीन क्षिण वरसांनकी[५६], निरंजन...।
तिसरी ढाल कहि, **कस्तूर** बोले सहि,
मंद हे मती(ति) मेरी कांनकी[५७], निरंजन... ॥८॥

॥ ढाल-४(चोथी) ॥ माताजी मारुदेवा रे भरथने इम कहें-ए देसी ॥

चालो सजनी जइए जिणंद जुहारवा, प्रभु बेठा छे पद्मासन महाराज जो।
तेहने रे भेटीनें भवदुख टालियें, लहिये सिवपुर नगरी केरो राज जो ॥१॥
साहेबजी सुणजो रे सेवक वीनति (आंकणी)।
दिलडानी वातु रे जिन आगल कहुं, तुम हम दोनुं रमता नव नव ख्याल जो।
करणी ते कीधी रे जिनपद पामियों, बिन करणी अमे रह्या संसारी-बाल जो ॥२॥
साहेब...

पहेलो तो अंतर रे में नवी(वि) जाणीओ, छे तो सरसव नें वलि मेरु गिरं(रिं)द जो।
हवे तो भंजण रे साहेब दोहलों, सुं जांणु हवे थासे(सु?) किम जिणंद जो ॥३॥
साहेब...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेवक ते आव्यो रे तुम गुण सांभरी, आस्या भरीयो हही(ई)डे हरख न माय जो।
साहेबजी नीहालो रे नाटिक दासनुं, आस्या पु(पू)रण थास्ये सेवक जाय जो ॥४॥
साहेब...

मनवंछीत फलीया रे प्रभुजी माहरा, सीधा सघला आज ओचिंता काज जो।
मनडु ते मोहयु रे देखी तुझ रूपनें, कर जोडी कहे **कस्तूर** ते मुनी(नि)राज जो ॥५॥
साहेब...

कलस- ईम आदि जिनवर संघ सुखकर प्रेमे धरी में गाईओ,
संवत एगुण बत्रीस**(१९३२)** महा सुद पंचमी सुहावीयो।
तिहां सेठ नरसी करे महोछव संग[५८] आव्यो अति घणो,
तिहां साधु साध्वी श्रावक श्रावी(वि)का चउविह संघ जय जय भणो ॥१॥

॥ इती(ति) श्री सम्पूर्णम् ॥

शब्दकोश

१. मजीठ लाल जेवो, २. निवास स्थान, ३. समुदाय, ४. फरके, ५. उत्साही, ६. पाषाण, ७. चोवीसी (२४ जिननो समूह), ८. उत्तम, ९. सिध्या, सिद्ध थया, १०. वीसी (२० जिन प्रतिमानो समूह), ११. पित्तळ, १२. वाजिंत्र १३. कुवाना, १४. दिक्कुमरी, १५. रचना, १६. उत्साहपूर्वक, १७. ठाठथी, १८. सूरिमंत्र, १९. उत्पत्ति, २०. नाश, २१. वस्तुनी स्थिरता, २२. उछाळी, २३. पायो, २४. स्पर्शी, २५. योग, २६. आत्म प्रदेशोने मेरुपर्वत जेवा स्थिर करती योगनी एक अवस्था, २७. योग व्यापारने रोकनारा, २८. रहित, २९. आदि सहित अंतवाळी, ३०. स्थिति, ३१. भवनी परंपरा, ३२. तूटी, ३३. रक्षक, ३४. लाभ, ३५. स्तवन, ३६. जिनालय, ३७. वापरे, ३८. गादी पर, ३९. सजी, ४०. कांचळी, ४१. अनुभवरूपी वेणी = चोटलो, ४२. गीतनो एक प्रकार, ४३. प्यार, प्रेम, ४४. बंधन, ४५. ?, ४६. तारा, ४७. नरकनी, ४८. वच्चे, ४९. स्त्रीओनो स्तन प्रदेश, ५०. दुःखी, ५१. दूर करो, ५२. परणावो, ५३. पटराणी, ५४. रमशे, ५५. चोपाट, ५६. वर्षो(गया)नी, ५७. काननी(?), ५८. संघ.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्यवहारचूलिका अंतर्गत षोडश-स्वप्नविचार

मुनि ध्यानसुंदरविजय

पं. गजेन्द्रभाई शाह

अवसर्पिणीकाळमां धर्मनो प्रारंभ त्रीजा आराना अंते थाय छे अने अंत पांचमा आराना अंते थतो होय छे। जेना चोथा आरामां दस-दस आश्चर्यो थई गया एवी अनंतकाळ पछी आवती वर्तमान हुंडा अवसर्पिणीनो पांचमो आरो केवो होय तेनी सहेजे कल्पना थई शके छे। आ दुषमकाळमां श्री वीरप्रभुना धर्मशासनमां आवनार उतार-चढावो विषे अत्यार सुधी प्राकृत, संस्कृत, देशी भाषाओमां अनेक कृतिओ रचाई चुकी छे। तेमां प्राकृत भाषाबद्ध 'व्यवहारचूलिका' प्रायः सौथी प्राचीन अने आगमिक प्रकारनी कृति कही शकाय। "श्री व्यवहारसूत्र" ए छ छेदसूत्रमानुं एक छेदसूत्र छे वर्तमानमां आ सूत्र पर लखायेलुं विस्तृतभाष्य "व्यवहार भाष्य" नामे मळे छे तेनी उपर वृत्ति पण रचाई छे।

"व्यवहारचूलिका" नामनो पण एक सूत्र विभाग हतो। ते कदाचित् आज सूत्रनी उपर पाछळथी ऊमेरायेल सूत्रना परिशिष्टरूप पण होवो संभवे छे। आजे ते संपूर्ण चूलिकाग्रंथ परिशिष्ट प्रायः उपलब्ध नथी किन्तु ते चूलिकानो एक विभाग 'षोडशस्वप्नविचार' नामे आजे मळे छे। जे हस्तलिखित ज्ञानभंडारोमां हस्तप्रतरूपे रक्षित छे। आना कर्ता विषे अद्यावधि कोई प्रमाण प्राप्त थयेल नथी। आ कृति आज सुधी प्रायः अप्रकाशित छे। हां, दीपावली कल्पोमां आ पाठ प्राप्त थाय छे यथा भद्रंकर प्रकाशन द्वारा प्रकाशित साध्वीजी श्री चंदनबालाश्रीजी संपादित दीपावली कल्पसंग्रह बहार पडायेल छे तेमां एक अज्ञातकर्तृक दीपावलीकल्प छे (पेज-१२८)। बीजो खरतरगच्छीय उमेदचंद्रजी रचित दीपावली कल्प छे। उमेदचंद्रजीवाळामां प्राकृत मूळपाठ स्वप्न नाम सुधी ज छे। त्यारबाद आगळनो फळादेश संस्कृतमां छे। आ फलादेश अज्ञातवाळा मूल अनुसार चाले छे। अज्ञातकर्तृक (प्राकृत) दीपावलीकल्पमां पण प्रत्येक स्वप्नोनो फळादेश संक्षिप्तमां छे। आ लेखमां प्रकाशित पाठ विस्तृत छे। जेम के-

चोथा स्वप्नना फळादेशमां अज्ञातकर्तृक दीपावली कल्पनो पाठ- **"चउत्थे भूआ णच्चंता दिट्ठा तस्स फलं कुमइजणा भूया इव णच्चिस्संति ॥४॥"**

प्रस्तुत लेखनो पाठ- **"चउत्थे [सुमिणे अट्टट्टहासं कोउहलेहिं K३] भूआ णच्चंति तेण कुमयजणा परंपरागमेण बहिया सच्छंदाचारचरिया सयमेव संजमिया आगासपडियाइ णिद्धंधसभासिणो वंझापुत्ता इव दव्वलिंगधारिणो जत्थ तत्थेव**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुत्तमवगाहित्ता तवतेणिया वयतेणिया स(सू?)त्ततेणिया अत्थतेणिया भूया इव णच्चिस्संति ॥४॥"

पांचमा स्वप्ना फळादेशमां अज्ञात दीपावलीकल्पनो पाठ- **"पंचमे दुवालसफणो सप्पो दिट्ठो तेण दुवालसवरिसाइं दुब्भिक्खे भविस्सइ तेण कालियसुयप्पमुहाइं सुआइं वोच्छिज्जंति चेइअदव्वहारिणो तत्थ जे साधुधम्मकंखिणो ते सव्वे दाहिणं दिसं वलभीए गमिस्संति तेण वणीअग्ग(मगा) अणेगा य ॥५॥"**

प्रस्तुत लेखनो पाठ-**"पंचमे सुमिणे दुवालसफणसंजुत्तो अही दिट्ठो तेण दुवालसवासपरिमाणो दुकालो भविस्सइ। तत्थ कालियसुअपमुहा सुया वोछिज्जिस्संति। चेईयदव्वहारिणो मुणी भविस्संति। [तत्थ जे साधुधम्मकंखिणो ते सव्वे दाहिणं दिसं वलभीए गमिस्संति तेण वणीअग्ग(मगा) अणेगा य D] लोहेण मालारोवणं जिण जम्मण [देवल उवहाण K३] उज्जमण मुणीहिं जिणबिंब पइट्ठावणविहीओ अविहिपंथे पयडिस्संति। तत्थ जे केई साहुसाहुणी सावयसावियाउ विहिमग्गं बूइस्संति, तेसिं बहूणं हीलणाणं निंदणाणं खिंसणाणं गरिहणाणं लभिस्संति॥५॥"** आदि.

प्रस्तुत लेखना पाठमां केटलीक विशेष विगतो पण सांपडे छे जेम के **'डब्भसंथारयं दूरूढस्स'** चंद्रगुप्तराजाने ज्यारे स्वप्न आव्या त्यारे ते दर्भना संथारा पर सूता हता आ पाठ प्रायः मात्र पाटणनी प्रतमां ज उपलब्ध थाय छे। आम पाठनी अधिकता अने शुद्धिनी दृष्टिए तथा स्वतंत्ररूपे अद्यावधि आ कृति प्रथम वार ज प्रकाशित थई रही छे।

नानकडा ग्रंथनी विषयवस्तु खूब सुंदर छे। चंद्रगुप्त राजाने पौषध दरम्यान सोळ स्वप्न आव्या छे एनो फलादेश युगप्रधान आचार्य श्री भद्रबाहुस्वामीजी करे छे। जेमां ऐतिहासिक दृष्टिए अमुक माहिती अगत्यनी छे। जेम के भद्रबाहुस्वामीजी ५०० शिष्यो साथे विहरता हता। चंद्रगुप्त राजा नखशिख जैन हता। छ तिथिओए पौषध करता हता। अंते दीक्षा लईने स्वर्गमां गया छे। जैनशासनने माटे गौरवनी वात छे के मौर्यवंशनो मुख्य पुरुष चाणक्य-शिष्य चंद्रगुप्त मौर्य जैन हतो।

स्वप्नोमां जे भरतक्षेत्रनुं भावि बताव्युं छे ते आजे साक्षात् चरितार्थ थई रह्युं देखाय छे। आ ग्रंथ 'उपदेशप्रासाद' मां पण आव्यो छे। माटे श्रावको आटला विभागने वांची शके एमां कांई अयोग्य नथी जणातुं।

प्रत परिचय

प्रस्तुत कृति संपादन माटे चार प्रतो, उपदेश प्रासाद अने पू. सा. चंदनबाळाश्रीजी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्वारा संपादित अज्ञातकर्तृक दीपावलीकल्पनो आधार लीधेल छे। प्रतोमां एक प्रत श्री बाबुलालभाई सरेमलजी बेडावाळा मारफते श्री हेमचंद्राचार्य जैन ज्ञानभंडार संघवी पाडाना भंडारमांथी डा. १३९ नं. १७१/६ प्राप्त थई छे। पाटण भंडारनी आ प्रतनो पाठ वधु शुद्ध छे, लखवानी शैली परथी ते १८मी सदीनी होय तेम लागे छे, प्रस्तुत संपादन मुख्यत्वे आ प्रतना आधारे तैयार थयुं छे।

बीजी प्रत आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा प्रत नं. १५३३० (ले. समय वि.सं. १९३० चैत्र शुक्ल ९ रविवार असियापुरनगर, लेखक- साधु गुलाबचंद) छे। आ प्रतमां अमुक पाठो नवां छे, अधिक माहिती छे, एम अशुद्धि पण घणी छे ज।

त्रीजी प्रत कोबानी प्रत नं. ६१२१५ छे। आ प्रत वि.सं. २०मी सदीनी होय तेम जणाय छे अने टबा सहित बृहदक्षरी प्रत छे।

चोथी प्रत पण कोबानी ज प्रत नं. ६४००६ छे। प्रतनो लेखन समय वि.सं. १९५२ फागण वदी ३, लींबडी मध्ये शेठ लंबकलाल सुंदरजीभाई द्वारा लखायेल छे। प्रत टबा सहित सुंदर अने सुवाच्य छे।

आ सिवाय "श्री उपदेश प्रासाद" ग्रंथमां पण आ षोडशस्वप्न विचार नामे आखुं प्रकरण प्राकृत भाषामां ज अति संक्षेपमां लीधुं छे, अमुक माहिती तेमां पण सारी छे, नवी छे, माटे तेनो पण पाठांतर तरीके संग्रह कर्यो छे। आगळ जो अन्य प्रतोनो पण सहारो लई संपादन हाथ धराय तो हजु पण वधु पाठभेदो बहार आवी शके तेम छे।

संपादन पद्धति- संपादनमां आदर्श प्रत तरीके पाटणनी प्रतने स्थान आपेल छे। अन्य प्रतना पाठांतरो नीचे फुटनोटमां मूकेल छे। कोबा ज्ञानभंडारनी प्रत नं. १५३३०ना पाठने K संज्ञा आपी छे। कोबानी बीजी प्रत नं. ६१२१५ ना पाठने K2, कोबानी त्रीजी प्रत नं. ६४००६ ना पाठने K3, उपदेशप्रासादना पाठने U अने दीपावलीकल्पना पाठने D संज्ञा आपेल छे। क्यांक मूळ आदर्श प्रतना पाठने गौण कर्यो छे अने अन्य शुद्ध जणाता पाठने मूक्यो छे। आ स्थळे आदर्शप्रतना पाठने फुटनोटमां P संज्ञाथी दर्शावेल छे अने जे प्रतना पाठने संपादनमां लीधेल छे ते प्रतनी संज्ञा पण पुनः पाठ सहित फुटनोटमां दर्शावेल छे। संपादनमां पाठ सुधारा माटे अमने शुद्ध जणाता पाठने ( )मां मूकेल छे। अन्य प्रतना आधारे उमेरेल पाठ [ ]मां मूकेल छे आ रीते उमेरेल पाठ साथे जे ते प्रतनो संकेत पण दर्शावेल छे। अनावश्यक जणातो पाठ { }मां मूकेल छे। आदर्श प्रतमां 'जाव' करीने संक्षिप्त करेल पाठनो ज्यां पुरो पाठ अन्य प्रतमांथी मळ्यो छे, तेने अमे संपादनमां लीधेल छे अने आदर्शना 'जाव' ने फुटनोटमां स्थान आपेल छे। K2 प्रतमांथी घणा लांबा-लांबा विशेष पाठो प्राप्त थता होवाथी वाचकने सहेजे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थाय के आने आदर्श प्रत तरीके राखवी जोईये पण तेनो उत्तर ए छे के आ प्रतमां सामे अन्य केटलाक पाठो संक्षिप्त पण छे (जेमके भद्रबाहुस्वामीना घणा विशेषणो नथी, चतुर्थ स्वप्न फलादेशमां **'तेण कुमयजणा परंपरागमेण बहिया सच्छंदाचारचरिया सयमेव संजमिया आगासपडियाइ णिद्धंधसभासिणो वंझापुत्ता इव दव्वलिंगधारिणो जत्थ तत्थेव सुत्तमवगाहित्ता तवतेणिया वयतेणिया स(सू?)त्ततेणिया अत्थतेणिया भूया इव णच्चिस्संति'** आवो विस्तृत पाठ न होतां मात्र **'तस्स फल असंजयाणं पूया भविस्सई'** आटलुं ज छे वगेरे), केटलाक पाठ न होवा (जेम के चंद्रगुप्त राजाने भद्रबाहुस्वामी पधार्यानी उद्यानपालक द्वारा अपाती वधामणी वाळो पाठ न होवो, सातमा स्वप्नफलादेशमां **'अप्पा साहु साहुणीणं रायपियमायगुणसमाणा। बहुअरा सवत्तिसमणा। आयरियपडिणीया उवज्झायपडिणीया चाउवण्णसंघपडिणीया अवण्णकारका अयसकारका अविणीया दरिद्दवाहिगहिया भविस्संति। अप्पपसंसगा साहुहीलणपरा बहुआ'** पाठ न होवो वगेरे) तथा अशुद्धिओ होवी वगेरे कारणोथी अमें तेने आदर्श तरीके नथी राखेल। अन्य प्रतोमांथी बधा ज पाठांतरो न लेतां प्रसंगपूर्तिमां अपेक्षित पाठांतरो ज लीधा छे। उपयोगमां लीधेल कोबानी त्रणे प्रतो नवी (२०मा शतकनी) छे। आमां समये-समये प्रक्षेपो थयेल जणाय छे। ते प्रक्षेपोमां केटलीक सारी वातो छे तो केटलीक पोत-पोतानी मान्यतानी होवा संभव छे।

कृतिनो अनुवाद के कृतिगत स्वप्नोनो भावार्थ अत्रे प्रस्तुत करेल नथी। स्वप्नोना भावार्थ के सार माटे वाचके उपदेश प्रासाद भा.३ व्याख्यान २०८ जोइ लेवुं. १६ स्वप्नोनी ऊपर गद्य-पद्य सज्झायादि मली ५० थी पण वधु कृतिओ उपलब्ध होवाथी वाचक तेना माध्यमे विषय बोध प्राप्त करी शके छे।

श्री व्यवहारचूलिका

॥श्री जिनाय नमः ॥

ते णं काले णं ते णं समए णं पाडलीपुरे णामे नयरे होत्था[१] वण्णओ जहा चंपा तहा भाणियव्वा। तत्थ णं [पाडलीपुर नयरे K२] पाडले[२] णामं वणसंडे [होत्था। वण्णओ K२]। पाडलीया णामं जक्खायतणे होत्था। वण्णओ०। तत्थ णं पाडलीपुरे [नयरे K२] चंदगुत्ते णामं राया होत्था। महया हिमवंत० वण्णओ। तस्स [णं K२] चंदगुत्तस्स [रन्नो K२] पियदंसणा णामं भारिया होत्था। [सुकुमाल पाणीपाया जाव सुरूवा। तस्स

१. णामे होत्था P, २. पाडली P, पाडले K२,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णं चंदगुत्तस्स रन्नो पियदंसणाए देवीए अत्तए पियदंसणे नामं कुमारे होत्था। सुकुमाल पाणीपाया जाव सुरूवा जहा सिवद्दे (सिवभद्दे) तहेव पच्चुवेष(स)माणे विहरई। चंदगुत्त रन्नो समणोवासए अड्ढे दित्ते विछिणे विउलभवणसयणासणजाणवाहणाइणा बहु धणधणं बहु जायरूवरयआउगपउगसंपउत्ता। विछिडीय विपुलभत्तपाणप्पभूया। K२][३]

ते णं काले णं ते णं समए (णं) चंदगुत्ते राया समणोवासए जाए[४]। अभिगयजीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे आसवसंवरनिजराकिरियाअहिगर णबंधमोक्ख[५]कुसले [असहेज्झ देवसुरनागसुवणजक्खरक्खस्सकिन्ना(न्न) रकिंपुरिसगंधवमहोरगदिवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ आणाइकम्मणिज्जा। निग्गंथे पावयणे निसंकिए निसं(कं)खिए निवितिगिछा। लद्धट्ठा गहियट्ठा पुछियट्ठा अभिगयट्ठा विणिछियट्ठा अट्ठिमिज्झा पेमाणुरागरत्ता। अयमाउसो निग्गंथे पावयणे अट्ठे सेसे अणट्ठे। उसीहफलीह अवंगुयदुवारा चीयंत ते अंतेउर परघरपवेसा बहुहिं सीलवयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं K२] चाउदसिट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु [पडिपुन्न K]पोसहमणुपालेमाणे [विहरइ। समणे निग्गंथे फासुए एसणिज्जे असणं पाणं खाइमं साइमं वत्थ पडिगाहं कंबलपायपुछणं वा पीढफलग सेज्झासंथारएणं। उसहभेसज्झेणं पडिलाभेमाणे विहरइ। K२]। जिणाणाए अट्ठिमिंजपेमाणारागरत्ते[६]।

[तए णं से चंदगुत्ते राया K२] अह अन्नया कयाई [जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पोसहसालं अणुपविस्सइ अणुपविसित्ता पोसहसाला पमज्झइ पमज्झइत्ता K२] पक्खियपोसह पडिजागरमाणस्स। अत्थ[७]पोरिसीए डब्भ[८]संथारयं दुरूढस्स सुहज्झाणोवगयस्स सुत्तजागरमोहीरमाणस्स[९] सोलस सुमिणे पासई, पासित्ता [णं K] पडिबुद्धे। चिंतासोगसागरं पविट्ठे। राइयार विसोहणं[१०] काऊण उट्ठियंमि सहस्सरसंमि[११] दिणयरे पोसहं पारेइ, पारेत्ता सइ[१२]गिहमणुप्पविट्ठे। अत्थाणीए सिहासणं, निसण्णे।

ते णं काले णं ते णं समए णं अज्जसंभूइविजयस्स अंतेवासी जाइ संपण्णे कुल संपण्णे बल संपण्णे उयंसी तेयंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जियमाए

---

३. [ ]मां दर्शित K२ना पाठनी जग्याए प्रत Pमां 'वण्णओ' करीने संक्षिप्त करेल छे। ४. 'ते णं काले णं' थी 'जाए' सुधीनो पाठ K२मां नथी, ५. जाव P, 'उवलद्ध' थी 'मोक्ख' सुधीनो पाठ K मां छे, जेने P मां 'जाव' द्वारा संक्षिप्त करायो छे। ६. 'जिणा'...थी 'रत्ते' सुधीनो आ वाक्य पाठ K२मां नथी, अट्ठि अट्ठीमिंजाए रागरत्तेमाणे...K, ७. तइयाए...K/K२/U, ८. दब्भ K. ९. सुत्तजागरा उहीरमाणा उहीरमाणस्स K, सुहपसुए उहीरमाणे उहीरमाणस्स K२, १०. विसोणत्थं P, विसोहणं...K, ११. उदए दिवायरे K२, १२. सय K,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जियलोभे[१३] जीवियासमरणभयविप्पमुक्के मंतप्पहाणे तंतप्पहाणे विज्जाचरणप्पहाणे ससमयपरसमयस्सणिच्छयप्पहाणे चउदसपुव्वी [सव्वक्खर सनीवाइणो K३] पंचसयसमणसयाइं परिवरिए[१४] [पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे K२] गामाणुगामं दूइज्जमाणे [सुहंसुहेणं विहरमाणे K२] [जुगप्पहाणे U] भदबाहू थेरे जेणेव पाडलीपुरे[१५] [जेणेव पाडलवणसंडे K२] [जेणेव जक्खस्स K] जक्खायतणे तेणेव समोसरिए[१६], [पाडलीपुरे बहिया पाडल वणसंडे K२] अहापडिरूवं अवग्गहं [गिन्हई K२] गिन्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तते णं [से पाडलीपुरे णयरे सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरपहेसुमहापहेसु जाव परिसा पज्जुवासई। K२] उज्जाणपालए चंदगुत्तरायं[१७] वद्धावेइ जएणं विजएणं। हट्ठेतुट्ठे राया तस्स पीतिदाणं दलेइ, ०त्ता [तए णं से चंदगुत्ते राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठा कोडंबिय पुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी। खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया पाडलीपुरं(रे) नयरे सभिंतरबाहिरयं आसमयं समजीया K२] जहा कोणिओ तहा णिग्गच्छति। [दोच्चंपि कोडंबिय पुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी। खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया अभिसेक हत्थी चउरंगिणी सेणा समज्झिय पच्चप्पिणह। एवं वुत्ता समाणा कोडंबियपुरिसे हट्ठतुट्ठा जाव पच्चपिणंति। चंदगुत्ते राया ण्हाय कयबलीकम्मे कयकोऊयमंगलपायच्छित्ते जाव सरीरे विभूसीय अभिसेकं हत्थी दूरुहइ दूरुहइत्ता बहु परिवारा संपरिवुडा पाडलीपुरं नयरीं मज्झं मज्झेणं निगछ(च्छ)इ निगच्छइत्ता जेणेव पाडलवणसंडे जेणेव भद्दबाहु नामं अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता K२] पंचविहेणमभिगमेणं वंदइ णमंसइ[१८] [सचित्ताणं दव्वाणं वीहुसरणाए ॥१॥ अचित्ताणं दव्वाणं अवीहुसरणाए ॥२॥ एगसाडिय उत्तरासणं करेइ करेत्ता ॥३॥ अंजलि कट्टु मत्थयं करेइ करेत्ता ॥४॥ चक्खूफासे एगा दिट्ठीए वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्झुवासणाए K२] पज्जुवासइ [पज्झुवासेत्ता धम्मं सुणेइ सुणेत्ता K२] धम्मकहा भाणियव्वा।

तओ चंदगुत्ते राया धम्मकहं णिसम्म हट्ठेतुट्ठे उट्ठाए [उठेति तिखुतो K] आयाहिणं पयाहिणं करित्ता पंजलिउडे सोलस सुमिणे वागरेइ। अज्ज मए भयवं डब्भ[१९]संथारयंसि अत्थपोरिसीए[२०] पोसहं पडिजागरमाणस्स सुहपसुत्तस्स सुहभावणाए भाविअमणोरहस्स सोलस सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ॥ तं जहा

---

१३. जियलोभे जाव जीवि०...K, १४. चउनाणोवगए पंचहिं अणगार सयहिं सद्धिं संपरिवुडे... K, १५. 'जेणेव पाडलीपुरे' पाठ K मां नथी. १६. उवागच्छई उवागच्छित्ता K२, १७. चंदगुत्तस्स...K, १८. करेइ करेत्ता K२, १९. दब्भ K, २०. पच्छिम पोरिसीय... K,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पढमं[२१] कप्परुक्खसाहा भग्गा[२२] ॥१॥ बीए सुमिणे अकालए सुरिए अत्थमीए दीट्ठो[२३] ॥२॥ तइए चंदमडलं चालणीरूवव्व सच्छिद्दं जायं ॥३॥ चउत्थे अट्टट्टहासकोउलेहिं भूएहिं णच्चियं[२४] ॥४॥ पंचमए दुवालसफणो कण्हसप्पो दिट्ठो ॥५॥ छट्ठे आगयं विमाणं वलियं[२५] ॥६॥ सत्तमे उक्कुरडियाए[२६]कमलं संजायं ॥७॥ अट्ठमए खज्जूओ[२७] उज्जोयं करेइ ॥८॥ नवमे सुमिणे महासरोवरं सुक्कं दाहिणदिसाए थोवजलभरियं डउहलियं[२८] दिट्ठं ॥९॥ दसमे सुवण्णथालयंमि सुण्हो[२९] पायसं भक्खेइ[३०] ॥१०॥ एकारसमे सुमिणे हत्थीय रूढो[३१] वानरो दिट्ठो ॥११॥ दुवालसमे सायरो मज्जायं[३२] मुंचिस्सइ [दीट्ठो K२] ॥१२॥ तेरसमे महारहे वच्छा जुत्ता दिट्ठा ॥१३॥ चउदसमे महग्घरयणं[३३] तेयहीणं दिट्ठं ॥१४॥ पण्णरसमे रायकुमारो[३४] वसहारूढो दिट्ठो ॥१५॥ सोलसमे गयकण्णजुअला जुज्झंता[३५] दिट्ठा ॥१६॥

एयारिसाणं सोलससुमिणाणं के मण्णे कल्लाणकलवित्तिविसेसे भविस्सइ[३६]।

[इय चंदगुत्तस्सरायस्स वयणं सोच्चा K२] तते णं अज्ज भदबाहू थेरे [गणहरो K३] [जुगप्पहाणे K२] [भवोदहितारगो(गे) D] चंदगुत्तं रायं एवं वयासी। संघसमुक्खं[३७] सुणह एयारिसाणं[३८] अत्थो[३९] ॥ [तं जहा K]

पढमं[४०] कप्परुक्खसाहा भग्गा[४१]। तस्स फलं अज्जप्पभिई कोऽवि राया [कोवि जुवराया K३] संजमं न गिन्हिस्सइ[४२] ॥१॥

बीय सुमिणे अकाले सूरिए अत्थमेणं[४३] [तस फलं दुसम्मकाले जाए K] केवलनाणं वुच्छिज्जिस्सइ ॥२॥

तइए चंद सयच्छिद्दो दिट्ठो। तेण जिणपण्णत्तो [धम्मो K] नाणाविहसामायारीए

---

२१. पढमे सुमिणे K, २२. पढमे सुमिणे कप्परूक्खे साहा भंगो... K, २३. बीए सूरत्थमियं P बीए सुमिणे अकालए सुरिए अत्थमीए दीट्ठो K२, २४. भूयाभूय नच्चंति दीट्ठा K२, २५. वलयं P, वलियं... K, पडिनियट्टियं D, २६. असुइठाणे D, २७. खजुयं... K, २८. डहुलियं... K, २९. साणहो... K, ३०. भखे... K, ३१. हत्थी आरुढो... K, हात्थी आरुढो K२, ३२. मजाया मुचीसइ... K, ३३. महारयणं... K, ३४. रायकवारो... K, ३५. गए कन्ह जुज्झंति... K, ३६. एइणं सुमिणाणं सारेणं भयवं सासणे किं किं भविस्सइ K, एएणं सुमिणाणुसारेणं भयव्वं जिणसासणे किं भविस्सई K२, एएण सुमिणाणुसारेण सासणे किं किं भविस्सई D, हे भयवं! एए सुमिणाणुसारेण सासणे किं किं भविस्सइ U, ३७. सवं सबंध मुख भणियं...K, ३८. ..रिसेणं...K, ३९. चंदगुत्त.....थी....अत्थो सुधीना पाठनी जगयाए- चउविहसंघसमक्खं भणियं चंदगुत्ते राया सुणेह अत्थो K२, ४०. पढमे सुमिणे K, ४१. भंगो...K, ४२. गिन्हस्सइ...K, ४३. सूरं अकालं अथमेई K, बीय सुमिणे अकाले सूरिए अत्थमेणं K२, बीयं सूरत्थमणं P,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पवट्टिस्सइ[४४] ॥३॥

चउत्थे [सुमिणे अटट्टहासं कोउहलेहिं K३] भूआ णच्चंति तेण[४५] कुमयजणा परंपरागमेण बहिया सच्छंदाचारचरिया सयमेव संजमिया आगासपडियाइ णिद्धंधसभासिणो वंझापुत्ता इव दव्वलिंगधारिणो जत्थ तत्थेव सुत्तं[अत्थ K३] मवगाहित्ता तवतेणिया वयतेणिया स(सू?)त्ततेणिया[४६] अत्थतेणिया भूया इव णच्चिस्संति[४७] [कुदेव कुगुरु मनिसइ K३] ॥४॥

पंचमे सुमिणे दुवालसफणसंजुत्तो अही दिट्ठो[४८] तेण दुवालसवासपरिमाणो दुकालो[४९] भविस्सइ। तत्थ[५०] कालियसुअपमुहा सुया[५१] वोछिज्जिस्संति। चेईयदव्वहारिणो मुणी भविस्संति। [तत्थ जे साधुधम्मकंखिणो ते सव्वे दाहिणं दिसं वलभीए गमिस्संति तेण वणीअग्ग(मगा) अणेगा य D] लोहेण मालारोवणं[५२] जिण जम्मण [देवल उवहाण K३] उज्जमण[५३] मुणीहिं जिणबिंब पइट्ठावणविहीओ अविहिपंथे[५४] पयडिस्संति। तत्थ जे केई साहुसाहुणी सावयसावियाउ विहिमग्गं बूइस्संति, तेसिं बहूणं हीलणाणं निंदणाणं खिंसणाणं गरिहणाणं[५५] लभिस्संति ॥५॥

छट्ठे सुमिणे आगयं विमाणं वलीयं[५६] तेण चारणसमणेदेवे[५७] भरहेरवएसु णो आगमिस्संति ॥६॥

सत्तमे सुमिणे कमलं उक्कुरडिय उग्गियं[५८]। तेण माहणखत्तियवइस्ससूद्द चउन्हं वण्णाणं मज्झे वइसवण्णेणं धम्मो भविस्सइ[५९]। ते वायणीयगा[६०] कवडकूडकलिया अप्पसुआ बहुमदट्ठपूरिया अणेगमग्गे धम्मं पडिस्संति। सुत्तरुई अप्पजणाणं भविस्सइ। अप्पा साहु साहुणीणं रायपियमायगुणसमाणा। बहु अरी सवत्तिसमणा[६१]। आयरियपडिणीया उवज्झायपडिणीया चाउवण्णसंघपडिणीया अवण्णकारका

---

४४. णाणाविहै सामाचारी पविट्ठसइ...K, एगे धम्मे अणेगे मग्गे भविस्सइ...U, ४५. भूया नचंति दिठो तस फलं...K, ४६. सुयतेणिया K, ४७. नचंति...K, K२मां चतुर्थ स्वप्न फलादेश- 'असंजयाणं पूया भविस्सई' आटलो ज छे।, ४८. ०ट्ठो. किण्हो...U, ४९. पमाणं दुकालं...K, ५०. तेण K, ५१. सुअ P, सुया K, ५२. लोभेणं मालारोवेणं उज्झमणमाइ बहवे तवप्पभावा पूयाइं संति। तत्थ जे साहूधम्मं कंखिणो ते बहवे उवग्ग उवदंसेति ॥५॥ K२, ५३. उवहाण जमण...K, ५४. अविहपंथे....P, अविहिपंथे K, ५५. हीलमाणीणं, निंदमाणाणं, खिंसमाणाणं, गरिहिजमाणाणं....K, ५६. वलयं P, वलीयं...K, चलित...U, ५७. चारणसमणा P, चारणसमणेदेवे K२, ५८. कमले उडियाए उगीयं...K, उकरडीयाए उदयं दिट्ठं K२, उक्करडीआए उग्गयं...U, ५९. तस्स फलं चत्तारि वणा पन्नत्ता। तं जहा। ब्राह्मणवस्सयखत्तीसुद्र। चत्तारि वण मज्झे वइस्स हत्थे धम्मो पन्नत्ते K२, ६०. वाणिएगो... K, ६१. बहुअरा विती समाणा...K,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[अविनयकारका K३] अयसकारका[६२] अविणीया दरिद्दवाहिगहिया भविस्संति। [सुहमाउ परंपरा सुयाण आयरियउवझायाणं कुलगण सहियाणं परंपराविरहियाणं पयं भविसई K३]अप्पपसंसगा साहुहीलणपरा [परंपराबाहिरिया K३]बहुआ [भविसई K३] ॥७॥

अट्ठमे सुमिणे खज्जूओ[६३] उज्जोअं करेइ। तेण समणा रायमग्गं[६४] मुत्तूण खज्जोआ इव किरिआए फडाडोवं दंसिऊण वइस्सवण्णे उज्जोयं करिस्संति [तेणं समणानिग्गंथाणं पूयासकार थोवा भविस्सई K] [बहुजणा मिच्छत्तरागिणो भविस्संति D] ॥८॥

णवमे सुमिणे सुक्कं सरोवरं[६५] दिट्ठं तेणं जत्थ त(ज)त्थ भूमीए जिणकल्लाणा[६६] तत्थ तत्थ देसे धम्महाणी भविस्सइ। दाहिणपच्छिमं[६७] किंपि किंपि धम्मं बहुमइ डउडलियं[६८] भविस्सति ॥९॥

दसमे सुमिणे सुण्हो[६९] सुवण्ण[७०]थालए पायसं भक्खेइ। तेण उत्तमकुलप्पसूआणं लच्छी णीयकुले गमिस्सइ। चोराणं चडियाणं मिच्छाणं [मलेछाणं K३]अहम्मीणं घरे लच्छी भविस्सइ [कुलकमं मग्गं मोतुणं उत्तमा नियमग्गं पवित्तस्सइ K] ॥१०॥

इक्कारस सुमिणे गयारूढो वानरो दिट्ठो। तेणं लोइयपक्खे उत(त्त)मकुलपसुया[७१] उग्गाभोगाहरिवंसइक्खागणाय [जादवपमुहाण K३] खत्तियाणं कमागयरज्जे हीणकुलजातीया रायाणो भविस्संति। [उत्तमराया अवंस पडिया रायाणं सेवगा भवीसई K३] लोउत्तरपक्खे सोहम्माउ परंपरागयसुद्धाणं आयरियउवज्झायाणं कुलगण[संघ K]सहियाणं रज्जपरंपराविरहियाणं रज्जं भविस्सइ [सुहिया रिद्धिसमा दुजणा। दुहिया अवमाणपयट्ठिया सज्जणा K] ॥११॥

बारसमे सुमिणे सायरो मज्झायं मुअमाणो दिट्ठो। ते णं लोइय पक्खे राया उम(म्म)ग्गचारिणो खत्तिया विस्संभघाइणो। उत्तमरायाणो अवसपडियरायाणं[७२] सेवगा भविस्संति। लोउत्तर पक्खे साहुरूवधारिणो असच्चवाइणो कूडकवडकरणकुसला उत्तमारियाणं विस्संभघाइणो भविस्संति। तेसिमवि ते आयरिया सेवाए पवट्टिस्संति[७३] ॥१२॥

तेरसमे सुमिणे महारहे वच्छा जुत्ता। बाला वेरग्गपरा चारित्तं न गिन्हिस्संति। जे वुड्ढभावे गिन्हिस्संति ते परमादपरा[७४] गुरुकुलवासचाइणो भविस्संति। जे बालभावे

६२. अजस्सकारगा....K, ६३. खजुयं....K, ६४. आयरियमग्गं K३, ६५. महासरोवर सुक्क...K, ६६. पंचजिणकल्लाणं...K, ६७. भरहेरवासे तिदसं धम्म विछेदं। एगं दाहिणदिसं थोव धम्मं भविस्सई K२, ६८. बहु डोहलियं... K, ६९. साणहो...K, ७०. सोवन्न...K, ७१. उतमकुलपसूओ P, उतमकुलपसुया K, ७२. अवसपडियाणं... K, ७३. पविदिसंति... K, ७४. महापमायणो... K,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गहिस्संति ते लज्जाए गुरुकुलवासं ण मुच्चिस्संति ॥१३॥

चउदसमे महग्घरयणं[७५] तेयहीणं दिट्ठं तेण भरहेरवय समणा [निग्गंत्था K] चारित्ततेयहीणा[७६] भविस्संति। कलहकरा आडंबरकरा उदवेगकरा[७७] असमाहिकरा [अविनयकरा होहिंति इत्थ समणा दससुवि खेत्तसु सविराहगा K३]थोवणेहा[७८] लिंगपवयणसाहिम्मयाणं दूसमा परापवाइणो अप्पपसंसिणो संविग्गसुअहराणं सुद्धमग्गपरूवगाणं मच्छरिणो भविस्संति ॥१४॥

पण्णरसमे सुमिणे रायकुमारो[७९] वसहारूढो[८०] दिट्ठो। तेण खत्तियकुमारा रायपयभट्ठा जवणा सव्वं गहिस्सइ ॥१५॥

सोलसमे सुमिणे गयकण्हजुअला जुज्झंता[८१] दिट्ठा। तेण अप्पमेहा अकालवासिणो [मेहा K२], पुत्ता य सीसा य अकालभासिणो, [देवगुरु KU] अम्मापिईय असूसगा पुत्ता[८२], भाय बंधुणो कलहकरा[८३]। समणा वि मच्छरभरिया। परूप्परं कलहणकोहणसीला भविस्संति ॥१६॥

एवं च महाराय। जिणवयणे अन्नहा न होति[८४]। [दुसम आरो महादुहदाइणो लोयाणं K] जे सीह[८५]परक्कमा ते[८६] [धम्मं काउण देवलोयं गमीसंति आगमेसाणं K३]भवसमुद्दं तरिस्संति[८७] केई देवलोयं गमिस्सइ। एवं सोऊण [चंदगुत्ते K२] राया [कामभोगातिव्वतए K२] संजायवेरग्गोउव[८८] पुत्तं रज्जे ठविऊण संजमे गहिऊण देवलोगं गओ[८९] [एयाणि सिमिणाणि सोच्चा शुद्धमगा य वसई सो सुही भविस्सइ K२] ॥

॥ इति श्री व्यवहारचूलिकायां षोडस् स्वप्न विचारः। समाप्तम् ॥

---

७५. महारयणं... K, ७६. चरित्ताए हीणो... K, ७७. उद्देयकरा P, उदवेगकरा K, ७८. थोवसणेहा.... K, ७९. रायकवारो... K, ८०. वसभारूढो... K, ८१. गयकिन्ह जुज्झंत... K, ८२. मायापिया ससुगा न भविसंति पुत्ता K, अम्मापियरस्स सुस्सुयगा न...U, ८३. भायगा अमरिसेण कलहं करिस्सइं...U, ८४. जिणवयणा अनहा न भविस्सइ... K, ८५. जेह P, जे सीह K, ८६. परकम्मा पुरसा ते... K, ८७. तरीऊण K२, ८८. निवण्णकामो... K, वयरागभावे पुहुत्ते K२, ८९. वेरागभावेण संजमेण गिन्हसंति वेरागभावे पातिउणं देवलोग उवयाणं K।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्मकथानुयोगनी महत्ता अने श्री देवभद्रसूरिकृत कथारत्नकोश

मुनि श्री पुण्यविजयजी

(गतांकथी आगळ...)

प्रस्तुत कथारत्नकोशनी खास विशेषता ए छे के, बीजा कथाकोशग्रंथमां एकनी एक प्रचलित कथाओ संग्रहायेली होय छे, त्यारे आ कथासंग्रहमां एम नथी; पण, कोई कोई आपवादिक कथाने बाद करीए तो, लगभग बधी ज कथाओ अपूर्व ज छे, जे बीजे स्थळे भाग्ये ज जोवामां आवे।

आ बधी धर्मकथाओने नानां बाळकोनी बाळभाषामां उतारवामां आवे तो एक सारी जेवी बाळकथानी श्रेणि तैयार थई शके तेम छे। ग्रंथकारे वर्णनशैली एवी राखी छे के ए रीते कथाश्रेणी तैयार करवा इच्छनारने घणुं शोधवानुं नथी रहेतुं।

५. कथारत्नकोशना प्रणेता आचार्य श्री देवभद्रसूरि

प्रस्तुत ग्रंथना प्रणेता आचार्य श्री देवभद्रसूरि छे। तेओश्री विक्रमनी बारमी शताब्दीना मान्य आचार्य छे। खरतरगच्छीय पट्टावलिमां तेमना विषे मात्र एटले ज उल्लेख मळे छे के, "तेमणे वि. सं. ११६७मां श्रीमान जिनवल्लभ गणिने अने वि. सं. ११६९मां वाचनाचार्य श्री जयदेवसूरिशिष्य श्री जिनदत्तने आचार्यपदारूढ कर्या हता।"

आथी विशेष एमना विषे बीजे कशो ज उल्लेख ए पट्टावलीओमां देखातो नथी। एटले आचार्य श्री देवभद्रसूरि विषेनी खास हकीकत आपणे एमनी पोतानी कृतिओ आदि उपरथी ज तारववानी रहे छे।

आचार्य श्री देवभद्रसूरिना विषयमां तेमनी जन्मभूमि, जन्मसंवत, ज्ञाति, माता-पिता, दीक्षा संवत, आचार्यपद संवत आदिने लगती कशीये नोंध हजु सुधी क्यांय जोवामां आवी नथी। तेम छतां तेमणे पोते रचेला महावीरचरित्र (जे वि. सं. ११३९मां आचार्यपदारूढ थवा पहेलां गुणचंद्र नामावस्थामां रच्युं छे)।

कथारत्नकोश (जे वि. सं. ११५८मां रचायेलो छे) अने पार्श्वनाथ चरित्र (जे वि. सं. ११६८मां रचेलुं छे) नी प्रशस्तिओमांथी तेमना विशेनी केटलीक महत्त्वनी माहिती आपणने मळी रहे छे; एटले सौ पहेलां आपणे उपरोक्त त्रणेय ग्रन्थोनी प्रशस्तिओना उपयोगी अंशने जोई लईए-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

"अइसयगुणरयणनिही मिच्छत्ततमंधलोयदिणनाहो ।
दूरुच्छारियवइरो **वइरसामी** समुप्पन्नो ॥४७॥

साहाइ तस्स **चंदे कुलम्मि** निप्पडिमपसमकुलभवणं ।
आसि **सिरिवद्धमाणो** मुणिनाहो संजमनिहि व्व ॥४८॥

मुणिवइणो तस्स हरट्टऽहाससियजसपसाहियासस्स ।
आसि दुवे वरसीसा जयपयडा सूर-ससिणो व्व ॥५०॥

भवजलहिवीइसंभंतभवियसंताणतारणसमत्थो ।
बोहित्थो व्व महत्थो सिरिसूरिजिणेसरो पढमो ॥५१॥

अन्नो य पुन्निमायंदसुंदरो **बुद्धिसागरो** सूरी ।
निम्मवियपवर**वागरण-छंदसत्थो** पसत्थमई ॥५३॥

एगंतवायविलसिरपरवाइकुरंगभंगसीहाणं ।
तेसिं सीसो **जिणचंद**सूरिनामो समुपन्नो ॥५४॥

संवेगरंगसाला न केवलं कव्वविरयणा जेणं ।
भव्वजणविम्हयकरी विहिया संजमपवित्ती वि ॥५५॥

ससमय-परसमयन्नू विसुद्धसिद्धंतदेसणाकुसलो ।
सयलमहिवलयवित्तो अन्नोऽ**भयदेवसूरि** त्ति ॥५६॥

जेणालंकारधरा सलक्खणा वरपया पसन्ना य ।
नव्वंगवित्तिरयणेण भारई कामिणि व्व कया ॥५७॥

तेसिं अस्थि विणेओ समत्थसत्थत्थबोहकुसलमई ।
सूरि **पसन्नचंदो** चंदो इव जणमणाणंदो ॥५८॥

तव्वयणेणं सिरि**सुमइवायगाणं** विणेयलेसेणं ।
गणिणा **गुणचंदेणं** रइयं **सिरिवीरचरियमिमं** ॥५६॥

जाओ तीसे सुंदरविचित्तलक्खणविराइयसरीरो ।
जेट्ठो **सिद्धो** पुत्तो बीओ पुण **वीरनामो** त्ति ॥७५॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेहिं तित्थाहिवपरमभत्तिपव्वस्समुव्वहंतेहिं ।
वीरजिणचरियमेयं कारवियं मुद्धबोहकरं ॥८०॥

नंदसिहिरुद्द ११३६ संखे वोक्कंते विकमाओ कालम्मि ।
जेट्ठस्स सुद्धतइयातिहिम्मि सोमे समत्तमिमं ॥८३॥

गुणचन्द्रीय-देवभद्रीयमहावीरचरितप्रशस्तिः ॥

"**चंदकुले** गुणगणवद्धमाणसिरि**वद्धमाण**सूरिस्स ।
सीसा **जिणेसरो बुद्धिसागरो** सूरिणो जाया ॥१॥

ताण **जिणचंद**सूरी सीसो सिरि**अभयदेवसूरि** वि।
रवि-ससहर व्व पयडा अहेसि सियगुणमऊहेहिं ॥३॥

तेसिं अत्थि विणेओ समत्यसत्थत्थपारपत्तमई ।
सूरी **पसन्नचंदो** न नामओ अत्थओ वि परं ॥४॥

तस्सेवगेहिं सिरि**सुमइवायगाणं** विणेयलेसेहिं ।
सिरि**देवभदसूरीहिं** एस रइ**ओ कहाको**सो ॥५॥

संघधुरंधरसिरि**सिद्ध-वीर**सेट्ठीण वयणओ जेहिं ।
चरियं चरिमजिणिंदस्स विरइयं **वीरनाहस्स** ॥६॥

परिकम्मिऊण विहियं जेहिं सइ भव्वलोगपाउग्गं ।
संवेगरंगसालाभिहाणमाराहणारयणं ॥७॥

वसुबाणरुद्द ११५८ संखे वच्चंते विक्कमाओ कालम्मि ।
लिहिओ पढमम्मि य पोत्थयाम्मि गणि **अमलचंदेण** ॥६॥

देवभद्राचार्यायकथाकोशप्रशस्तिः ॥

(क्रमशः)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुस्तक समीक्षा

डॉ. हेमन्त कुमार

पुस्तक नाम	:	पाक्षिक सूत्र।
सूत्रकार	:	गणधर भगवन्त।
टीकाकार	:	श्री यशोदेवसूरिजी।
टीका अनुवादक	:	श्री हृदयसुन्दरविजयजी।
संशोधक	:	न्यायरत्नविजयजी।
प्रकाशक	:	रत्नत्रयी ट्रस्ट, नारणपुरा, अहमदाबाद-३८०००१।
आवृत्ति	:	द्वितीय।
प्रकाशन वर्ष	:	२०७७।
भाषा	:	प्राकृत, संस्कृत एवं गुजराती।
विशेषता	:	संशोधित पाठ के साथ टीका का सरल गुजराती अनुवाद।

पूज्य गणधरभगवन्तों द्वारा रचित पाक्षिकसूत्र का स्वाध्याय संयमी आत्माओं के लिए निरतिचार संयम पालन करने में परम सहायक सिद्ध होता है। यह मूल कृति इतनी क्लिष्ट और सारगर्भित है कि सामान्यजन इसकी गंभीरता को सरलतापूर्वक समझ नहीं पाते हैं। कृति की गंभीरता को देखते हुए पूज्य आचार्य यशोदेवसूरिजी ने लगभग विक्रम की १२वीं शताब्दी में इस कृति पर संस्कृत टीका की रचना की थी। कालान्तर में टीका भी गंभीरतम होती चली गई।

संस्कृत भाषा का अभ्यास न कर सके हों ऐसे श्रमण-श्रमणियों के लिए सूत्र के मर्म को समझ पाना कठिन था। इस कठिनाई को देखते हुए काफी दिनों से इसके सरल अनुवाद की प्रतीक्षा हो रही थी। पूज्य आचार्य श्री रत्नसुन्दरसूरीश्वरजी महाराज साहब के विद्वान शिष्य पूज्य श्री हृदयसुन्दरविजयजी ने इस बहुप्रतीक्षित कमी को दूर कर संयमी महात्माओं के लिए सरल मार्ग प्रशस्त कर दिया है।

टीका की रचना पूज्य श्री यशोदेवसूरिजी ने पाटण नगर में सिद्धराज जयसिंह के शासनकाल में सोनी नेमिचंद्र की पौषधशाला में रहकर २७०० श्लोक प्रमाण में की। वे चंद्रगच्छ के वसतिविहारी सरवालगच्छ के वाचनाचार्य पूज्य श्री समुद्रघोष की परम्परा में पूज्य श्री चंद्रसूरिजी के शिष्य थे । इस टीका के अतिरिक्त उन्होंने अन्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कई कृतियों की भी रचना की थी।

प्रस्तुत प्रकाशन पुरानी छपी प्रताकार के मुकाबले प्राचीन हस्तप्रतों के आधार से पाठ को विशेषरूप से शुद्ध किया गया है। यहाँ एक निवेदन करने की भावना हो रही है कि प्राचीन हस्तप्रतों को जिन ज्ञानभंडारों की ओर से प्राप्त किया गया हो उनका नामोल्लेख होता तो ज्यादा उचित रहता।

प्रस्तुत ग्रंथ गुजराती अनुवाद के साथ प्रकाशित किया गया है । बड़े एवं सुस्पष्ट अक्षरों में प्रकाशित इस ग्रंथ में मूल पाठ लाल रंग में मुद्रित है । विस्तृत अनुक्रमणिका, टिप्पणी, अन्य पूरक माहिती आदि से अलंकृत इस प्रकाशन के आवरण पृष्ठ पर दिया गया चित्र भी कृति के अनुरूप ही है।

गुजराती अनुवाद के आधार पर पाक्षिकसूत्र का अर्थ समझकर भावपूर्वक प्रतिक्रमण करके कर्मों की निर्जरा करने में सरलता होगी, साथ ही संयमी महात्मा शीघ्रातिशीघ्र मोक्षलक्ष्मी की प्राप्ति में सफलता प्राप्त करेंगे।

इस कृति के अनुवाद का कार्य पूज्य मुनि श्री हृदयसुन्दरविजयजी का प्रथम प्रयास है, ऐसा उन्होंने अपने **"मारी हृदयोर्मि"** में लिखा है। आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर परिवार उनसे इसी प्रकार के और साहित्य की अपेक्षा रखते हुए उनके कार्य की अनुमोदना करता है।

आशा है पूज्यश्रीजी भविष्य में इसी प्रकार उत्तम साहित्य का सृजन करते हुए संयमजीवन की उच्चता को प्राप्त करेंगे।

❋ ♦ ❋

बलीहारि पंडित तणी, जस मुख अमी झरंत।

तास वचन श्रवणें सुणी, मन रति अति करंत॥ प्रत- १२६५८२

भावार्थ :- ऐसे पंडितों की बलिहारी है कि जिनके मुख से जब ज्ञान की धारा बहती है, तब उस अमृत वचन को श्रवण करते ही मन अति आनंदित हो जाता है।

For Private and Personal Use Only

आचार्य श्रीकैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर का अवलोकन करते हुए गुजरात के माननीय उपमुख्यमन्त्री श्री नितिनभाई पटेल एवं साथ में गणिवर्यश्री प्रशांतसागरजी म. तथा संस्था के ट्रस्टीवर्य श्री डिम्पलभाई मारफतिया एवं श्री कल्पेशभाई जे. शाह

For Private and Personal Use Only

Registered Under RNI Registration No. GUJMUL/2014/66126 SHRUTSAGAR (MONTHLY).
Published on 15th of every month and Permitted to Post at Gift City SO, and on 20th date of every month under Postal Regd. No. G-GNR-334 issued by SSP GNR valid up to 31/12/2021.

दि. १०-१-२०२१ को पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्य श्रीपद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा के दर्शन हेतु पधारे गुजरात राज्य के माननीय उपमुख्यमन्त्री श्री नितिनभाई पटेल

BOOK-POST / PRINTED MATTER

प्रकाशक
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा
जि. गांधीनगर ३८२४२६
फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२
फेक्स (०७९) २३२७६२४९
Website : www.kobatirth.org
email : gyanmandir@kobatirth.org

Printed and Published by : HIREN KISHORBHAI DOSHI, on behalf of SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.&Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat.
And Printed at : NAVPRABHAT PRINTING PRESS, 9, Punaji Industrial Estate, Dhobighat, Dudheshwar, Ahmedabad-380004 and
Published at : SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.& Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. Editor : HIREN KISHORBHAI DOSHI

For Private and Personal Use Only